छायावाद के सौ वर्ष और मुकुटधर पाण्डेय

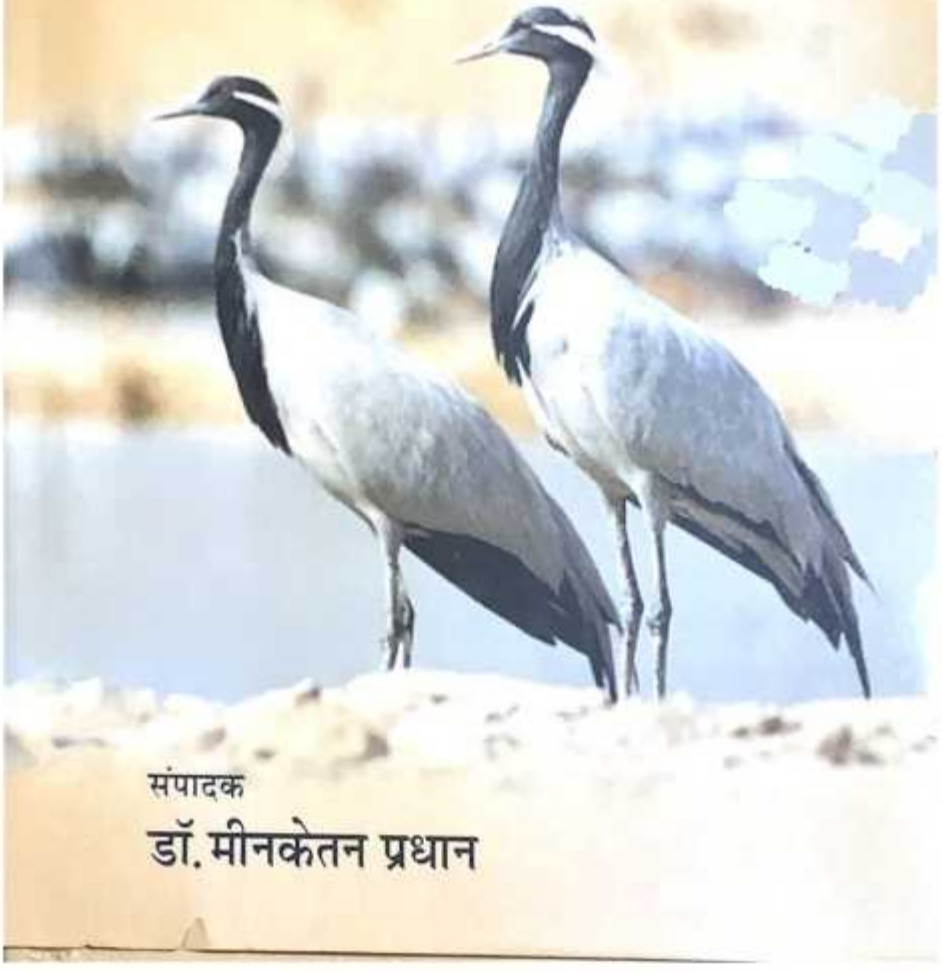

संपादक
डॉ. मीनकेतन प्रधान

छायावाद के सौ वर्ष और मुकुटधर पाण्डेय

संपादक

मीनकेतन प्रधान

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष–हिंदी
किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान (अग्रणी) महाविद्यालय
रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

सह संपादक

सौरभ सराफ

पी-एच.डी. शोधार्थी
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

नेशनल पब्लिशिंग कंपनी

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002

शाखा :

प्लाट नं. 28, गणेश नगर कॉलोनी, वेस्ट मारडपल्ली

सिकंदराबाद 500026 (तेलंगाना)

मो. 9395314841 / ई-मेल : mohitmalik@hotmail.com

ISBN 978-93-92175-27-5

मूल्य : ₹ 2500

नेशनल पब्लिशिंग कंपनी, 1, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002 द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण : 2023 / © मीनकेतन प्रधान / शिवा [illegible]

112.	मुकुटधर पाण्डेय का साहित्यिक प्रदेय	डॉ. आशा रानी	517
113.	मुकुटधर पाण्डेय तथा कन्नड़ कवि एम. गोपालकृष्ण अडिगा में समानता	डॉ. सुनीता एच.बी.	522
114.	ऐतिहासिक निबंधकार : पंडित मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. विनय कुमार पाठक	526
115.	छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. श्रद्धा चन्द्राकर	532
116.	छायावाद के आधार स्तंभ : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. रेखा गीता	537
117.	छायावादी काव्य में मुकुटधर पाण्डेय का योगदान	डॉ. सविता चौधरी	543
118.	छायावाद के निष्ठ साधक : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. कुमार पुष्कर सिंह	547
119.	मुकुटधर पाण्डेय का काव्य-व्यक्तित्व	लिंगम चिरंजीव राव	551
120.	पाण्डेय बंधुओं का साहित्येतिहास (रेखाचित्र)	डॉ. राजू पाण्डेय	554
121.	मुकुटधर पाण्डेय : छायावाद के प्रशस्त स्तंभ	डॉ. रमेश कुमार टंडन	557
122.	छायावाद : हिमालयीन-शृंखला के पंच केदार	अवधेश पुजारी	560
123.	मुकुटधर पाण्डेय के काव्य में प्रकृति	डॉ. जयकिशोर शर्मा	562
124.	मुकुटधर पाण्डेय और छायावाद	डॉ. सीमा शर्मा	564
125.	मुकुटधर पाण्डेय की भाषा-दृष्टि	प्रो. (डॉ.) हेमचन्द्र पाण्डेय	568
126.	मुकुटधर पाण्डेय : ऋत्विज हो तुम महायज्ञ के...	डॉ. अभिनेष सुराना	573
127.	मुकुटधर पाण्डेय : छायावाद के प्रमुख स्तंभ	नीरज कुमार आजाद	578
128.	मुकुटधर पाण्डेय की काव्य-साधना	प्रो. (डॉ.) उमाकान्त मिश्र	583
129.	जिन्हें छायावाद भूल गया...	कन्हैया लाल खांडपा	586
130.	छायावाद के सूत्रधार : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. उर्मिला कुमारी	590
131.	मुकुटधर पाण्डेय का साहित्यिक अवदान	डॉ. रामायण प्रसाद टंडन	594
132.	छायावाद के प्रवर्तक : मुकुटधर पाण्डेय	मंजू उपाध्याय	597
133.	छायावाद के उन्नायक : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण	601
134.	मुकुटधर पाण्डेय : जीवन की समग्रता के कवि	डॉ. मनीषा अवस्थी	604
135.	प्रकृति पूजक : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. विभा ठाकुर	619
136.	मुकुटधर पाण्डेय का व्यक्तित्व-कृतित्व	डॉ. आंचल श्रीवास्तव	624
137.	'कुररी के प्रति' के कवि : मुकुटधर पाण्डेय	विनूता पी.	627
138.	छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता	डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति बीरूलाल बरगाह	629
139.	मुकुटधर पाण्डेय के काव्य में प्रगतिशील चिंतन	डॉ. अमृतलाल जिनगर	635
140.	छायावाद के प्रतिष्ठापक : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. पद्मा कुमारी	641
141.	मुकुटधर पाण्डेय का रचना-संसार	किशोर कुमार शर्मा	645
142.	'महानदी' के यशस्वी कवि : मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. अर्चना झा	648
143.	छायावाद को मुकुटधर पाण्डेय की देन	डॉ. प्रदीप कुमार निर्णेजक	653
144.	छायावाद के पुरोधा : मुकुटधर पाण्डेय	श्रीमती इंदु सिंह	655
145.	छायावाद के पथ-प्रदर्शक : मुकुटधर पाण्डेय	प्रतिमा चौहान	659
146.	छायावाद युग और मुकुटधर पाण्डेय	डॉ. सुनीता छाबड़ा	662
147.	मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य में लोक-चेतना	डॉ. श्रीमती रंजना मिश्रा	665

मुकुटधर पाण्डेय : छायावाद के प्रशस्त स्तंभ

–डॉ. रमेश कुमार टंडन

छायावाद का प्रयोग उन कविताओं के लिए हुआ, जिनकी छाया (अर्थ) कहीं और पड़ती थी। आलोचना में, यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म में आध्यात्मिक छाया का भान होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं शैली में अभिव्यंजना की जाती थी। "प्रेम, प्रकृति, और मानव सौंदर्य की स्वानुभूतिमयी सूक्ष्म अभिव्यंजना लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद जाता है।"

छायावादी काव्य का स्वरूप

द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप स्थूलता, अतिशय नैतिकता, एवं इतिवृत्तात्मकता के विरोध छायावाद का जन्म हुआ। इसमें अतीत गौरव की अभिव्यक्ति, स्वाधीनता की चेतना, राष्ट्रप्रेम, त्याग बलिदान, अस्मिता की खोज तथा गांधीवादी जीवन-मूल्यों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

छायावाद के प्रवर्तक मुकुटधर पाण्डेय

में आपकी प्रथम छायावादी कविता 'कुररी के प्रति' है, जिसमें आपने महानदी के तट पर उड़ते पक्षी 'कुररी' को देख कर अपने मनोभाव को अभिव्यक्त किया है। अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई एक दिन आधी रात को किसी पक्षी के करुण विलाप से वे नींद से जाग उठे और करुणा से उनके के तार निम्न पंक्तियों में झंकृत हो उठे :

परदेशी पक्षी, चिन्ता की धारा को दे मोड़।
अन्तर की पीड़ा को दे अब अन्तर-तर से जोड़।।

पाण्डेय जी कवि के साथ-साथ एक कहानीकार, निबंधकार, तथा उपन्यासकार भी थे। सबसे महत्त्वपूर्ण थे, आपने पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी बखूबी निर्वहन किया। आपका निधन 06 नवंबर, 1989 हुआ।

